कानूनकी मर्यादा है

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ११

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १४ मअी, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

अुड़ीसामें विनोबा — ४

१

जगन्नाथपुरीमें दस दिनके निवासमें सागरकी "ओम् ओम्" की गर्जना प्रतिदिन सुनाअी दे रही थी, परंतु सर्वोदय मेलेका अन्तिम दिन आया और अुस दिन विनोबाजीने सागरसे कअी गुनी अधिक अूंची आवाजसे गर्जना की: "हमें १९५७ तक शासन-मुक्त समाजकी स्थापना करनी है, विश्वशांति निर्माण करनी है। अब सिर्फ दो साल बचे हैं, अिसलिअे आप अपने सब कामोंको छोड़कर आअिये, अिस क्रांतिमें अपनी सारी शक्ति लगाअिये। मेरा यह आवाहन सिर्फ सर्वोदयवालोंको नहीं है, केवल हिन्दुस्तानको नहीं है, यह आवाहन तो मैं समस्त दुनियाको कर रहा हूं। आपको गांव-गांव लोगोंके पास पहुंचना है और अुन्हें समझाना है कि भाअी यह दानपत्र तो विश्वशांतिके लिअे वोट होगा।"

अिस तरह अेक ज्वलंत आवाहनका अुच्चारण करके दस दिन बाद, रामनवमीके शुभ मुहूर्त पर विनोबाजीने पुरीके पावन क्षेत्रको प्रणाम किया। यात्रा फिरसे सूर्यनारायणकी नियमिततासे शुरू हुअी है।

गांवके बच्चे जब विनोबाजीके अिर्द-गिर्द अिकट्ठे हो जाते हैं, विनोबाजी स्वयं अुनमें से अेक बन जाते हैं। और फिर अुन दोस्तोंकी महफिलमें कभी-कभी बड़ा दिलचस्प वार्तालाप होता है। चंडीब्रह्मपुरमें अैसा ही हुआ था। बच्चोंने अुनको घेर लिया। अुनका प्रेमसंवाद शुरू हुआ। विनोबाजीने अेकसे पूछा "जानते हो, मैं किस कामके लिअे आया हूं?"

अेक छोटा बच्चा झटसे खड़ा होकर बोला, "हां, हम जानते हैं।"

दूसरा कहने लगा, "आप जमीन मांगने आये हैं।"

विनोबाजीने पूछा, "जमीन लेकर मैं क्या करूंगा?"

सब अेकसाथ जोरसे चिल्लाये, "गरीबोंको देंगे, जिनके पास नहीं है, अुनको देंगे।"

विनोबाका तीसरा सवाल था, "तुम पसंद करते हो अिस कामको?"

सबसे आवाज आयी, "हां।"

विनोबाजीने फिर कहा कि तुम अपने पिताजीसे कहो कि बाबा जमीन मांगने आया है, अुसे जमीन जरूर देनी चाहिये। यह सुनकर लड़के चारों ओर दौड़े। छोटे-छोटे बच्चे अपने पिताजीको शामकी सभामें ले आये और अुनसे जमीन दिलवायी। अिस घटनासे प्रसन्न होकर विनोबाजीने अपने भाषणमें कहा, "छोटे-छोटे गांवोंके बच्चोंको भी अिस कामके लिअे कितना अुत्साह है! वे हमारे स्वयंसेवक बने और हमारी मांग अुन्होंने अपने पिताजीके पास पहुंचा दी और जमीन दिलायी, यह छोटी चीज नहीं है। हम लोगोंमें अेक खयाल है कि बच्चोंके मुखसे जो चीज निकलती है, वह भगवान्की बात होती है।"

अकसर मंदिर और मठ जहां रहता है, वहां अुसकी जमीनका क्या किया जाय यह चर्चा चलती है। विनोबाजी कहते हैं, "बहते हुअे पानीकी तरह धर्म समय-समय पर बदलता है। अेक जमाना था जब कि यज्ञमें बकरोंका बलिदान करना धर्म समझा जाता था। परंतु अब वैष्णव संतोंने हमें सिखाया है कि भगवान्को भक्ति अर्पण करनी चाहिये, न कि प्राणीका गोश्त। लोगोंने अेक बड़ा धर्मकार्य समझकर बड़ी श्रद्धासे मंदिरोंको जमीन दी थी। अुस जमानेमें जमीन ज्यादा थी और जनसंख्या कम। परंतु अिस जमानेमें, जबकि जमीन कम है और अुसकी मांग सर्वत्र है, अुस हालतमें गरीबोंसे जमीन छीनना या अुनको जमीनसे वंचित रखना और अुस जमीनका लाभ मंदिरको देना अधर्म होगा। अिससे भगवान् हरगिज प्रसन्न नहीं होगा। अिसलिअे मंदिरवालोंको भूदानको अपना आन्दोलन समझ कर अुठा लेना चाहिये, क्योंकि यह धर्म-संस्थापनाका आन्दोलन है। अगर वे अैसा करेंगे तो मंदिरकी जो अुस जमानेमें अिज्जत थी वैसी फिरसे होगी और धर्मकी ज्योति फिरसे जगेगी।"

निमापारामें निवासस्थानसे दूर चंद्रमाके शांत, शीतल अेवं सौम्य प्रकाशमें, आम्र वृक्षोंकी संगतिमें अेक छोटेसे मैदानमें विनोबाजी कुछ कम्युनिस्ट भाअियोंसे चर्चा कर रहे थे। कम्युनिस्ट भाअियोंका कहना था कि विनोबाजी अपनी पद्धतिसे काम कर रहे हैं तो फिर कानूनको क्यों नहीं रोकते। विनोबाजीने कहा कि अहिंसाका कानूनसे कोअी विरोध नहीं है। अहिंसक आन्दोलनसे लोकमत तैयार होता है और फिर अुसके अनुसार कानून बनता है। गांवकी कुल जमीन गांवकी हो अैसा यदि कानून बनता है, तो वह हमारे हितमें ही है। वह कानून अहिंसाकी मर्यादामें ही आता है।

अिसके अलावा थोड़ीसी और चर्चा हुअी। अुस परसे विनोबाजीने कहा कि आपका अिस आन्दोलनसे विरोध है अैसा लगता नहीं। तो आपकी हमारे कामको मदद मिलेगी कि नहीं?

वे भाअी तैयार हो गये। लेकिन कहने लगे, "फिर भूदान-वालोंको भी हमारे काममें मदद देनी चाहिये।"

विनोबाजीने कहा, "फिर तो यह सौदा हो गया। भूदानका काम अैसा है कि अिसमें किसीका मतभेद नहीं हो सकता। परंतु दूसरे कामोंमें मतभेद हो सकता है। जैसे कांग्रेस भूदानका काम करेगी; परंतु अिलेक्शन, मेंबर बनाना अित्यादिमें हम अुसको मदद नहीं देंगे।"

आखिर अुन भाअियोंने कबूल किया कि अुनके काममें और भूदानमें विशेष फर्क नहीं है और भूदानमें अपनी सुविधाके मुताबिक काम करनेका आश्वासन दिया।

बहनोंके सामने विनोबाजी गार्गी, मैत्रेयी और सुलभा अित्यादि तेजस्वी और ज्ञानी स्त्रियोंका आदर्श रखते हैं। अुनका कहना है कि बहनोंमें अखंड ज्ञान-लालसा होनी चाहिये। और आत्मज्ञानके बिना अुनका अुद्धार कदापि संभव नहीं है। आजकल दोपहरमें बहनोंको वे अुपनिषद्के श्लोक पढ़ाते हैं। अुनका यह अत्यन्त प्रिय काम है।

www.vinoba.in

जब वे ऊंचे और मधुर कंठसे श्लोक गाते हैं, तब अैसा भास होता है कि अुपनिषत्कालीन ऋषि अुनके मुखसे बोल रहे हैं।

९-४-'५५

२

दो सालका जो आवाहन सर्वोदय संमेलनमें मिला है, अुसका जिक्र करते हुअे विनोबाजी कहते हैं कि जो अच्छे कामोंमें फंसे हुअे हैं अुनके लिअे अुसे छोड़कर बाहर आना मुश्किल हो जाता है। लोहेकी शृंखला जल्दी तोड़ी जा सकती है, परंतु सुवर्णकी शृंखलाको तोड़ना कठिन मालूम होता है। क्योंकि अुसे हम शृंखला नहीं, अलंकार ही समझने लग जाते हैं।

विनोबाजीने भूदान-यज्ञके कामको भक्ति मार्ग कहा है और वे बार-बार कहते हैं कि यह हृदय-शुद्धिका आंदोलन है। बेगुनियापारामें अपने भाषणमें अुन्होंने कहा था कि हृदय-शुद्धिके जरिये समाजमें परिवर्तन करना यह अुसका फलित है। अपनी हृदय-शुद्धि करना अुत्तम बीज निर्माण करना है, अपने जीवनका परिवर्तन करना बीज बोना है और समाजका परिवर्तन करना फलोंको काटनेकी बातें है। परंतु कुछ लोग अैसे होते हैं, जो अच्छे बीज निर्माण करके घरमें रखते हैं। और कुछ अैसे होते हैं, जो बीज बोये बगैर काटना चाहते हैं।

पश्चिमके लोग अल्हड़ बच्चे हैं और हिन्दुस्तानके लोगोंका दस हजार सालका पुराना अनुभव है। अिसलिअे हिन्दुस्तानकी सभ्यता ज्यादा विकसित हुअी है, यह विनोबाजीका कहना है। रास्तेमें अेक दिन शिक्षणके विषयमें बोलते हुअे मद्रासके अेक भाअीसे अुन्होंने कहा, "हमारे यहां ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, संन्यास आश्रमकी जो योजना है, वह सर्वोत्तम शिक्षणकी योजना है। अिसमें जिंदगी भर शिक्षण लेनेकी बात है। अिसमें दीक्षाकी जो बात है वह हमारा वैशिष्ट्य है। पश्चिमकी योजनामें दीक्षाकी बात नहीं है। पश्चिमसे हमें विज्ञान सीखना है। लेकिन समाज-शास्त्र और मानसशास्त्रमें तो वे अभी बच्चे हैं। ये दोनों शास्त्र भारतमें काफी विकसित हुअे हैं।" और फिर शामकी सभामें अपने विस्तृत भाषणमें अुन्होंने बताया कि दानकी प्रक्रिया भारतीय समाजशास्त्रका अेक बुनियादी सिद्धान्त है।

तेरह अप्रैलसे अठारह अप्रैल तक हिन्दुस्तानमें सारे कार्यकर्ता भूदानका संदेश लेकर पैदल यात्रा कर रहे हैं। अिधर विनोबाजीकी टोलीके भाअी-बहन भी पड़ाव पर पहुंचनेके बाद आसपासके गांवोंमें टोलियां बनाकर जाते हैं। कोअी साहित्य लेकर विचार-प्रचार करता है, कोअी विनोबाजीका संदेश सुनाकर जमीन मांगता है। अिस तरह हर कार्यकर्ता गांव-गांवमें 'अग्निकणिका' लेकर जा रहा है।

तेरह तारीखको अपने प्रार्थना-प्रवचनमें विनोबाजीने भूदानके काममें जो तीन बल हैं अुनका विस्तृत विवेचन किया। अुन्होंने बताया कि पहला बल है सत्यका। यह बात सत्य है कि जमीनकी मालकियत नहीं हो सकती, भूमि सबके लिअे है। अिसलिअे भूमि-हीनोंको, जो काश्त करना चाहते हैं, भूमि मिलनी ही चाहिये। अिसलिअे यह अीश्वरीय बल है। दूसरा बल है अिन गरीबोंकी तपस्याका। और तीसरा बल है भूमिवान और श्रीमानोंके हृदयमें प्रेम और अुदारताका, जो भारतीय संस्कृतिका हिस्सा है। अिस तरह तीन महान् ताकतें जिस देशमें प्रकट होनेवाली हैं, अुस देशमें यह मसला जल्दी हल होनेवाला है।

खुरदामें कांग्रेस कार्यकर्ताओंने अपने थानेसे षष्ठांश भूमि हासिल करनेका आश्वासन दिया। अिस बातका जिक्र करते हुअे विनोबाजीने अपने प्रवचनमें कहा कि कांग्रेस अेक बड़ी जमात है। अिसलिअे अगर वह अिस कामको अुठा लेती है तो बहुत काम होगा। बिहारकी कांग्रेसने हिम्मत करके अेक प्रस्तावके जरिये ३२ लाख अेकड़ भूमि प्राप्त करनेका संकल्प किया और देशके सामने मिसाल पेश की। काम अुठाने पर सबका सहयोग हासिल होता ही है, परंतु अुसके लिअे हिम्मत चाहिये।

खुरदामें कम्युनिस्ट भाअी विनोबाजीसे मिले। पूछ रहे थे कि लोग आपको दान देते हैं और अुधर बेदखली भी करते हैं। क्या आप अिसे गलत नहीं मानते? विनोबाजीने अुनको बताया कि वे अिसको गलत मानते हैं। बिहारमें अिसके हलकी योजना भी की थी। अिसके लिअे समिति भी बनायी थी। जो लोग अिस तरह बेदखलियां करते हैं, अुनको हम समझाते हैं कि भाअी आप यह गलत काम कर रहे हैं। जिन लोगोंको आपने बेदखल किया वे अगर भूमिहीन बनते हैं, तो अुनके लिअे जितनी पर्याप्त जमीन हो अुतनी आप हमको दान दीजिये तो हम अुनको देंगे। मालिकोंको यह बात पसंद आती है। कुछ लोगोंने अिस तरह जमीन दान भी की है।

सारूआके प्रवचनमें विनोबाजीने बताया कि भूदान-यज्ञसे सब दूर सद्भावना निर्माण हो रही है। अिसका कारण यही है कि विश्वास रखने पर हमने विश्वास रखा है। अिसलिअे हमारे मनमें जरा भी संदेह नहीं है कि यह आंदोलन जैसे जैसे आगे बढ़ेगा, अुसका परिणाम सबके जीवन पर पड़ेगा और मानवके जीवनमें अुन्नति होनेमें अुससे मदद मिलेगी। अिसलिअे यह जो भूदान-यज्ञका मंथन-दंड हमने हाथमें लिया है, अुससे जीवनका मंथन होगा, परिणामस्वरूप अुसमें से जो मक्खन निकलेगा वह परमामृत होगा।

१६-४-'५५

३

लोग मानते हैं कि गीता और भागवत जैसे ग्रंथ तो परलोकके हैं। परन्तु विनोबाजी कहते हैं कि अगर अिन सद्ग्रंथोंकी श्रद्धा अुनके जीवनमें स्थिर नहीं होती, तो भूदान-यज्ञमें आज अुन्हें जो अत्यंत स्फूर्ति आती है वह नहीं आती।

पाठकोंको स्मरण होगा कि आजकल रास्तेमें अुड़िया भागवतका सामूहिक अध्ययन विनोबाजीकी यात्रामें होता है। अेक दिन रास्तेमें वे कहने लगे, "जब हम जेलमें थे तब कौनसी पुस्तक हमें देना और कौनसी न देना यह सरकारी अधिकारी तय करते थे। किसीने कोअी राजनैतिक ग्रंथकी मांग की, तो वे अधिकारी कहते थे कि यह ग्रंथ खतरनाक है। आपको हम यह नहीं दे सकते। लेकिन मैं जो ग्रन्थ मांगता था, वह सरकार हमेशा मुझे देती थी। वह समझती थी कि यह तो अैसा निरुपद्रवी ग्रंथ है कि अिससे सरकारका कोअी नुकसान नहीं होनेवाला है। अंग्रेजी सत्ताको कोअी खतरा नहीं है। अिसलिअे मुझे गीता, अुपनिषद्, संतोंके चरित्र मिल जाते थे। लेकिन बेवकूफ अंग्रेज समझते नहीं थे कि अुनके राज्यको अगर ज्यादासे ज्यादा किसी चीजका खतरा है तो अिन्हीं ग्रंथोंसे। जो राजनीतिक कैदी वहां गये थे अुनको हमेशा अिन ग्रन्थोंने हिम्मत दी थी और अुसीके कारण वे अधिक तेजस्वी होकर बाहर निकल पड़े। और गीताका आधार नहीं होता तो गांधी नहीं बनता, लोकमान्य तिलक नहीं टिकता और अरविंद घोषका काम नहीं होता। अिस तरह जीवनकी बुनियाद जिन ग्रंथों पर है, वे ग्रंथ अधार्मिक समाजके लिअे और जुल्मी लोगोंके लिअे ज्यादासे ज्यादा खतरनाक होते हैं। अिसी वास्ते अुन सन्तोंको समाजने बेहद सताया। अब तो अुनकी कीर्ति लोग गाते हैं, परन्तु जब वे थे तब अुनका समाजने बड़ा विरोध किया। क्योंकि वे जो बातें करते थे वे समाजको अुखाड़नेवाली थीं।... अिसलिअे मैं तो चाहता हूं कि हमारे जवानोंमें अिन सद्ग्रंथोंका प्रचार हो, तो वे जवान आजकी अिस समाज-रचनाको आग लगाये बगैर नहीं रहेंगे और वे अैसी ठंडी आग लगायेंगे कि अुसको बुझानेके लिअे पानीकी जरूरत नहीं होगी।"

गत अठारह अप्रैलको राजसुनाखलामें नयी तालीमके प्रशिक्षण केन्द्रमें विनोबाजीका निवास था। अुस दिन हिन्दुस्तान भरमें भूमि-क्रान्तिके सप्ताहके अंतिम दिनके निमित्त हजारों सभायें हुअी होंगी।

अुस दिन शामकी सभामें विनोबाजीने अपने छोटेसे भाषणमें कहा कि फलदाता परमेश्वर होता है। परन्तु वह देखता है कि भक्त प्रामाणिकतासे काम करता है या नहीं। अिसलिअे हमारे प्रयत्नमें प्रामाणिकता और परमेश्वर पर श्रद्धा होनी चाहिये।

www.vinoba.in

सेवाग्राम आश्रम अुसी मुहूर्त पर बंद हुआ। अिस अैतिहासिक निर्णयका स्वागत करते हुअे अुन्होंने कहा कि यह कोअी छोटी घटना नहीं है। गांधीजी वहां रहते थे और वह अेक देशका श्रद्धा-स्थान है। वहांके लोग भूदानके लिअे निकल पड़ते हैं, तो देशके लिअे वह अेक आवाहन होता है। आज हमारी अहिंसाकी कसौटी हो रही है। अिसलिअे जो लोग राजनीतिक पक्षमें हैं, रचनात्मक काममें हैं, सरकारी तंत्रमें हैं, वे सब अपना काम छोड़ कर दो सालके लिअे अिसमें कूद पड़ें।

बेदखलीकी समस्याका जिक्र करते हुअे अुन्होंने कहा कि भूदान कार्यकर्ताओंको यह समस्या हाथमें लेनी चाहिये। अंतमें अुन्होंने कहा कि आत्मामें सत्य संकल्पकी शक्ति होती है और अुसी शक्तिसे सारी दुनियाका कारोबार चल रहा है। हमारे चित्तमें जो बल है, वह अंदरके आत्मतत्त्वका बल है। वह जहां जहां प्रकट होता है, वहां प्रतिज्ञा सफल होती है। हमेशा बड़े कामोंके लिअे हम सामूहिक प्रतिज्ञा करते हैं। अुसीको आजकी भाषामें सामूहिक अिच्छाशक्ति कहते हैं। जहां वह शक्ति प्रकट होती है, वहां शुभ कार्य सफल होते हैं।

राजसुनाखलामें केन्द्रके सदस्य और रणपुर थानाके कर्मी विनोबाजीसे मिले। अुनके सामने अपने क्रान्तिकारी विचार विनोबाजीने रखे, "आजकल जो बुनियादी शालाअें चलती हैं वे बिलकुल नरसिंहावतार जैसी हैं, न पशु हैं, न मानव। नयी तालीमको सरकारने कबूल किया है, अिसलिअे वह अब देशमें चलेगी। परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि हमें कुछ नमूनेके विद्यालय चलाने चाहिये और अिसका भी सतत स्मरण रखना चाहिये कि नयी तालीमका आजकी समाज-रचनाके साथ मूलभूत विरोध है। नयी तालीम नयी समाज-रचनामें ही पनप सकती है। अिसलिअे पुरानी समाज-रचनाको खतम करनेकी जिम्मेदारी नयी तालीम पर है। जिस तालीमका आजकी समाज-रचनाके साथ विरोध नहीं होता, वह नयी तालीम नहीं हो सकती।"

हाल ही में श्री पद्मावती चौधरी (श्री गोपबंधु चौधरीजीकी माता)का स्वर्गवास हुआ। अुनके श्राद्ध-दिनके निमित्त ता० २० अप्रैलको ठीक ग्यारह बजे प्रार्थना हुअी और विनोबाजीके सुझाव पर भागवतका अेक अंश गाया गया।

भागवतके अुस अंशमें अुद्धवने भगवान्‌को जन्म-मृत्यु पर प्रश्न पूछा है और भगवान्‌ने कहा है कि जन्म और मृत्यु दोनों मनके कारण होते हैं। पर वे हमें लागू नहीं हैं। जैसे वर्तुलके अनेक बिंदु होते हैं, पर मध्यबिंदुका अुनके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं होता। मध्यबिंदुके कारण तो वर्तुल निर्माण होता है। वैसे आत्माके अिर्दगिर्द अिन्द्रिय और मन आदि खड़े हैं और आत्मा केवल साक्षीरूप, आधाररूप होता है। परन्तु हम अिन्द्रियों और मनके साथ अेकरूप हो जाते हैं। अिसलिअे हम सुखी या दुःखी बनते हैं। और अिसीलिअे जो देह और आत्माका पृथक्करण करता है, वह दीपस्तम्भ बनकर सबको प्रकाश देनेवाला व्यवहारसे अलग होगा। अिसके बाद भगवान्‌ने स्थितप्रज्ञकी निष्कंप और अडोल प्रज्ञाकी महिमा गायी है। अुद्धव फिर पूछता है कि आज तक अैसा कोअी मनुष्य हुआ है? अुसके जवाबमें भगवान्‌ने भिक्षु-गीत गाया है। यह बताते हुअे विनोबाजीने कहा कि आज हमने जो काम अुठाया है वह भिक्षाका ही है। हम धर्मकी भिक्षा मांगते हैं, "भाअी, अपने भाअीको पहचानो, अुसे अपने परिवारमें दाखिल करो, अहंता, ममता छोड़ो।" भागवतमें अुस भिक्षककी शांतिका जो वर्णन किया है वह हममें कब आयगी मालूम नहीं, परन्तु अुसके लिअे यह सारा चिंतन आवश्यक है कि हम अिन्द्रिय-मन आदिसे अलग हैं।

२३-४-'५५ कु० दे०

आबूमें मधुमक्खी-पालन

आबूमें वैज्ञानिक मधुमक्खी-पालनका काम शुरू करनेके लिअे कैसी क्या सुविधा है, कितना क्षेत्र और क्या संभावनाअें हैं, यह मालूम करनेके लिअे वहां प्रारंभिक जांच-पड़ताल दिसम्बर, १९४९ में की गयी थी। वहां पहुंचने पर शीघ्र ही मैंने यह देखा कि मेरा काम आसानीसे होनेवाला नहीं है। लोगोंसे मिलकर जब मैंने अुन्हें अपनी बात समझायी, तो अुन्होंने कृत्रिम छत्ते बांधकर मधुमक्खियोंका पालन करनेके मेरे विचारकी हंसी अुड़ायी। अुन्होंने मेरी बात समझना तो दूर, सुननेसे भी अिनकार कर दिया। कृत्रिम छत्तोंमें मधुमक्खियां पालनेको वे 'पाप' समझते थे और अुस हद तक मुझे पापका दोषी मानते थे।

मधुमक्खियोंकी आबादियोंकी प्राप्ति आदिके संबंधमें गांववालोंसे जो सहकार मिलना चाहिये था, वह नहीं मिल रहा था। क्योंकि अुन्हें यह डर था कि हमारा अुद्देश्य मधुमक्खियोंको अिकट्ठा करके कहीं दूर बाहर भेज देना है जिससे अुन्हें आगे अपने लिअे पर्याप्त शहद मिलना बंद हो जायगा। यहां तक कि शिक्षित लोग भी अिस डरसे मुक्त नहीं थे।

अैसी प्रतिकूल परिस्थितियोंके बावजूद, जैसा कि नीचे दिये जा रहे कोष्ठकसे प्रगट होगा, काममें धीमी सही परंतु स्थिर प्रगति हुअी है:

वर्ष	मधुमक्खी-पालकों की संख्या	मधुमक्खियोंके छत्तोंकी संख्या	शहदका अुत्पादन	विशेष
१९५१	१९	४६	२१४ पौंड	२५ छत्तोंसे
१९५२	३५	६५	१७५ "	२५ छत्तोंसे; अिस साल मानसून अच्छी नहीं आयी।
१९५३	४२	५६	३३३ पौंड	३९ छत्तोंसे
१९५४	५१	१५६	५२८ "	सितम्बर और अक्तूबरकी पूरी फसल गलत समय पर ज्यादा दिन तक पानी बरसते रहनेके कारण मारी गयी।

मधुमक्खी-पालकोंको अुनके घर पर तालीम देनेके अिवा मधुमक्खी-पालनके वर्ग अलगसे भी नियमित रूपसे चलाये जा रहे हैं। सन् १९५४ में ५ फरवरीसे ५ जून तक यानी चार माह मधुमक्खी-पालनकी तालीमके तीन वर्ग चलाये गये।

अितने कामके बाद अब गांववालोंको भी कृत्रिम छत्तोंमें मधुमक्खियां पालनेका महत्त्व समझमें आ गया है। अनुभवके आधार पर मैं यह भी कह सकता हूं कि यदि कोअी आबूमें मधुमक्खी-पालनका काम अुत्साहसे करे और अुसमें थोड़ी बुद्धि और चतुराअीका अुपयोग करे, तो वह आसानीसे प्रतिवर्ष फी कालोनी ५० पौंड शहद पैदा कर सकता है, जिसकी कीमत १०० रु० से १२५ रु०तक होगी। आबूके अेक मधुमक्खी-पालकने केन्द्रसे कोअी विशेष सहायता पाये बिना अेक ही मौसममें ३० पौंड शहद पैदा किया। (आबूमें शहदकी फसलके दो मौसम होते हैं; अेक मार्चसे मअी तक — वसन्तकालीन फसल; और दूसरा सितम्बरसे नवम्बर तक — शीत-ऋतुकालीन फसल)

मैंने दूसरे पहाड़ी स्थानोंमें भी मधुमक्खी-पालनका काम देखा है और मैं निःसंकोच कह सकता हूं कि आबूमें मधुमक्खी-पालनकी अुत्तम सुविधायें हैं। आबहवा अितनी अनुकूल है कि मधुमक्खियां सालभर हर ऋतुमें स्वस्थ रहती हैं; बदलती हुअी ऋतुओंके अनुसार पालकको अुनकी खास देखरेख नहीं करना पड़ती। जंगली आबादियां मिलती हैं और मधुसंचयके लिअे मधुमक्खियोंको वनस्पतिकी जैसी प्रचुरता चाहिये, वह भी प्राप्त है। आबूकी मधुमक्खियां दूसरी जगहोंकी मधुमक्खियोंसे आकारमें कुछ बड़ी होती हैं और ज्यादा परिश्रमी भी होती हैं। अिस दृष्टिसे अुनका नंबर

www.vinoba.in

हिमालयकी मधुमक्खियोंके बाद ही आता है। और आबूका शहद तो अपनी सुगंध, स्वाद, घनत्व और लाभकारी गुणोंके लिहाजसे बिलकुल अनुपम है।

बी–कीपिंग सेन्टर, आबू अे० राजगोपालन्

(अंग्रेजीसे)

हरिजनसेवक

१४ मअी १९५५

कानूनकी मर्यादा है

देशमें स्वराज्य स्थापित होनेके बाद, खासकर अुत्तरप्रदेशमें, दो बातों पर जोर दिया गया: (१) सारे देशमें राजभाषाके नाते हिंदी दाखिल की जाय और (२) गोवध कानूनन् बंद करवा दिया जाय। ये दोनों बातें बड़ी महत्त्वकी हैं; यहां तक कि अुनका जिक्र हमारे संविधानमें भी किया गया है।

भाषाके बारेमें संविधानमें कहा गया है कि देशके सरकारी कारोबारकी भाषा हिंदी होगी। लेकिन सन् १९६५ तक अंग्रेजी चालू रहेगी, सिवा कि राष्ट्रपति अमुक बताये हुअे ढंगसे अुसको हटानेकी आज्ञा दें।

गोवधके बारेमें कहा गया है कि राज्य गाय और बछड़ों तथा दूध देनेवाले या भार ढोनेवाले पशुओंका कतल बन्द करनेके अुपाय करनेकी चेष्टा करेगा।

हम जानते हैं कि अिन दोनों बातोंको लेकर हमारे देशमें अेक जमानेसे बड़ा तीव्र मतभेद और झगड़ा भी रहा है। आज भी वह चालू है। और अुसका कारण मजहबी कौमवाद था। हिंदू और मुसलमानोंमें अिन दोनोंके कारण भारी मनमुटाव हो जाया करता था। हमारे राष्ट्रमें ये दो बातें देशकी जातियोंके बीच बड़ी खराब हालत पैदा करती रही हैं।

हिंदी कैसी हो? हिन्दुस्तानी क्या है? अुर्दूका स्थान क्या है? अेक ही भाषासे दो रूप बनी हुअी हिंदी-अुर्दूमें अेका होगा या नहीं? अेक भाषाके दो स्वरूप मानते हुअे भी हिन्दुओंने संस्कृतमय हिन्दी चलाकर अुसको अपनी भाषा कहा; मुसलमानोंने अरबी-फारसीमय अुर्दू चलाकर अुसको अपनी जबान कहा। हमारा मजहबी भेद भाषा तक भी चला गया!

स्वराज आनेके बाद अिस चीजने कुछ नया रूप लिया, हालांकि मूल भाव तो वही रहा। संविधानने राज्यकी कारोबारी भाषाको 'हिंदी' नाम दिया, अुससे यह बात चलाअी गअी कि संस्कृतमय या शुद्ध हिंदी अब हमारी कारोबारी भाषा होगी; अुर्दू अब नहीं रहेगी। यहां तक कि अुत्तरप्रदेशने अुर्दूके लिअे शिक्षामें भी कोअी स्थान नहीं रखा! और दूसरे सिरे पर अैसी आवाज अुठाअी गअी कि केन्द्रीय सरकारी दफ्तरकी भाषा फौरन हिंदी कर दी जाय; नौकरोंकी भरती हिंदी ज्ञानके आधार पर की जाय, वगैरा। यहां तक कि अहिंदी नौकरोंका दिल्लीमें होना अब असंभव-सा बन जाना चाहिये, अैसी हवा पैदा हुअी! आगे बढ़कर अैसा भी अभिप्राय हिंदी प्रदेशने जाहिर किया कि देशकी युनिवर्सिटियां भी हिंदी माध्यमसे अब अपना काम शुरू करें। अिसमें न केवल हिंदू जाति-वाद बल्कि प्रांतवाद भी मालूम पड़ता है, जिसका असर हिन्दी-प्रचार पर बड़ा खराब पड़ा है।

भारतके खास करके अहिंदी-भाषी लोग हिंदीको अपनाकर अुसको हमारे देशकी आंतर-भाषा और केन्द्रीय राजभाषाके रूपमें सिद्ध करें, यह जरूरी माना गया। अिसीसे तो अुसका जिक्र संविधानमें है। परंतु कानूनके बलसे करो, और जल्दी करो, अैसा कहना दूसरी बात है। संविधानका आदेश हिंदी-प्रचारका रचनात्मक आंदोलन कार्य करना है और १५ सालके अंदर अमुक मुकाम पर पहुंचना है। अिसे ध्यानमें रखकर अिसके लिअे आयोजनबद्ध कार्यका अेक नकशा हो, यह भी ठीक है। परंतु कानूनसे नौकरियोंके लिअे जल्दबाजी की जाय और वह भी अहिंदी-भाषी नहीं परंतु अुत्तर भारतके लोगोंकी तरफसे की जाय, यह बड़ी अनिष्ट बात बन जाती है।

अब गोवधका कार्य देखें। अुसमें भी यही दूषण दिखाअी देता है कि गोसेवाके लिअे नहीं परंतु कानूनसे गोवधको रोकनेके लिअे आन्दोलन शुरू हुआ। जनसंघ, हिंदू महासभा आदि जातीय संस्थाअें अिसमें अग्रसर रहीं। अुत्तरप्रदेशमें गोवध-निषेधका कायदा बना। और सेठ गोविन्ददास जैसे कांग्रेसीने पार्लियामेन्टमें भी अैसा कानून बनानेके लिअे प्रस्ताव रखा। कांग्रेसमें भी जातीय वैमनस्यभाव रखने-वाले लोग जमानेसे हैं, यह हम सब जानते हैं। किसीने अिसके विषयमें यहां तक कहा था कि सामान्य कांग्रेसीकी ठीक अूपरकी चमड़ी अुधेड़ो तो अंदरसे जातिद्वेषवाला हिंदू ही दिखाअी देगा। राष्ट्रीय मुसलमान कहे जानेवालोंका भी यही हाल रहा।

अब पाकिस्तानके अलग होनेके बाद, हिन्दू लोगोंने माना कि गोवध कानूनसे बंद करा सकते हैं। यहां तक कि चंद राजकीय पक्षोंने अिसको अपना 'स्लोगन' और खास काम बनाकर झंडा अुठाया है। गोवध और हिंदीके बारेमें आज हम अिस मंजिल पर पहुंचे हैं।

साफ है कि दोनोंके अन्दर हमारा पुराना अितिहास काम कर रहा है। हिन्दूवाद दोनोंके जरिये नये रूपमें सामने आता है। अिससे मालूम होता है कि श्री मीराबहनने जाहिरा तौर पर जो यह कहा कि गोवध-निषेध आन्दोलन जातीय आन्दोलन है, यह गोसेवा-भावसे नहीं चलाया जाता, वह गलत नहीं है। परंतु खास तो अिस परसे हम देख सकते हैं कि कानूनसे गाय बच नहीं सकती; हमारी सच्ची सेवासे ही वह बचेगी और हम भी बचेंगे। परंतु गोवध-निषेधवादी मंडल अिस रचनात्मक कार्यके लिअे लोगोंमें प्रचार नहीं करते; कतलखानों पर 'सत्याग्रह' करनेके लिअे आदमी भेजते हैं।

अेक भाअीने कहा कि कानूनसे शराब बन्द करते हो तो गोवध क्यों नहीं बंद करते? यह तुलना ही गलत और बेढंगी है। शराबकी दुकानें सरकार चलाती है; और शराब कोअी खान-पानकी चीज नहीं है, बल्कि मनुष्यकी बुद्धि और आत्माको मारने-वाली चीज है। अिसलिअे गोमांसकी शराबके साथ तुलना करना गलत होगा। न सरकार अुसमें अपनी तरफसे कोअी अुत्तेजना देती है। बल्कि, हरअेक राज्यमें कतलके लिअे तरह तरहकी पाबंदियां लगी होती हैं; और भी जो पाबंदियां सारे समाजके लिअे आर्थिक दृष्टिसे जरूरी समझें, लगा सकते हैं। अिस विषयमें धर्मदृष्टि सबकी समान नहीं है। हिन्दुओंकी दृष्टि गोसेवाकी है। वे जरूर अपना गोसेवाधर्म पालें और सरकारसे जरूरी सब सहायता लें। संविधानका आदेश है कि गोवंश बढ़ाना, अुसकी अुन्नति करना राज्यका फर्ज होगा। परंतु बात तो यह सुनने और देखनेमें आती है कि बहुतेरे ढोर कतलके लिअे हिन्दुओंसे मिलते हैं। अिसको जरूर रोकना होगा। अुसका रास्ता रचनात्मक गोसेवा है। अुससे हम दूध-घी और बैलके रूपमें बल-शक्ति पायेंगे और गोवध कम कर सकेंगे। सरकारसे यह नहीं बनेगा।

गोमांस खानेवाली जातियोंके लिअे भी अेक विचार जरूर आता है। गोमांस खाना ही चाहिये अैसा धर्म शायद किसीका नहीं; अुन्हें खानेकी छूट जरूर है। वे लोग अपनी पड़ोसी जातिके भावकी कदर करें और गोमांस त्यागको विचारपूर्वक अपनाते चलें। हिन्दुओंमें गोमांस भक्षण नहीं है; परंतु वे मांस तो खाते

www.vinoba.in

हैं। और दवाअीके रूपमें गोमांस भी खा लेते हैं। यह अगर सही हो, तो ठीक नहीं। मालूम नहीं परदेशमें जानेवाले हिन्दू गोमांसका परहेज कहां तक पाल सकते होंगे। कहनेका मतलब, गोवध बंद करानेका रास्ता पूरी तरह गाय और अुसके परिवारका पालन — अुसकी विज्ञान-शुद्ध सेवा करना है। गांधीजीने गोसेवा-संघ कायम करके अुसको मार्ग दिखानेकी भरसक चेष्टा की; परन्तु हमने अुसको सफल नहीं बनाया। आज जब स्वराज्य है, हम अिस विषयमें जोरोंसे कदम अुठाकर बहुत तरक्की कर सकते हैं। परंतु केवल कानूनसे गोवध-निषेध करो अितनी ही पुकार अुठाना गोपालनके विषयमें हमारे लिअे फायदेकी बात नहीं होगी।

३०-४-'५५ मगनभाई देसाई

गांधी, नेहरू और विनोबा

सर्वभूतहिते रताः

१

अंग्रेज कवि टेनिसनके पौत्रने अेक मननीय लेखमें (अंग्रेजी मासिक 'अेन्काअुन्टर', दिसम्बर १९५४) गांधीजी और विनोबाके विषयमें अेक साथ विचार किया है। वे अिन दोनोंसे मिले थे। आगे वे विनोबाके विषयमें अेक पुस्तक लिखनेका सोच रहे हैं।

अुनका लेख बहुत मर्मदर्शी और प्रेरक है। अुसका शीर्षक है 'डाअिनेस्टी ऑफ सेन्ट्स' — 'सन्तोंका राजवंश'। भारतमें हम राजवंशों और अुनके राज्योंके बारेमें जानते हैं। यह लेखक 'सन्तोंका राजवंश' बताते मालूम होते हैं। कुछ नहीं तो अैसा व्यंग तो करते ही हैं। अवतारवाद और गुरुवादमें विश्वास रखनेवाली भारतीय प्रजाके लिअे यह बिलकुल गलत कटाक्ष नहीं माना जायगा।

लेखककी कुछ बातें बड़ी दिलचस्प हैं। वे पूछते हैं — गांधीके चले जानेके बाद भारतके नेतृत्वका क्या होनेवाला है? "गांधीके बाद अुनका वारिस कौन होगा? अुनकी साधुताके तेजका अुपयोग करना जाननेवाला कोअी राजनीतिज्ञ? या अस्थायी रूपसे राजनीतिज्ञ बननेवाला कोअी सन्त?"

आज हमारा देश तो 'जवाहरके बाद कौन?' यह सवाल पूछने तक आगे बढ़ गया है, जब कि यह लेखक गांधीजीके अवसानके आठ बरस बाद 'गांधीके बाद कौन?' पूछते हैं! अेक तरहसे दोनों सवाल अेकसे सूचक हैं। राजशाही और बुजुर्ग-शाहीके खयालोंमें पली हुअी प्रजाके मनमें ये सवाल कुदरती तौर पर अुठनेवाले माने जायंगे। विदेशी लेखकको भी अिसी तरहका सवाल सूझता है और वे पूछते हैं, 'गांधीके बाद कौन?' और वे स्वयं ही अिसका अुत्तर देते हैं, जो भारतके पिछले पांच-छह वर्षोंके अितिहासमें से अुन्हें मिलता है। थोड़ेमें वे नीचेके आशयका जवाब देते हैं:

पहले हम राजनीतिज्ञोंको लें। अुन्होंने बरसों तक महात्मा गांधीके साथ काम किया और लोकप्रियता प्राप्त की। परन्तु श्री नेहरूको पश्चिमकी आधुनिकता अितनी ज्यादा पसंद है कि यंत्रोद्योगवादके दुनियाके सबसे बड़े विरोधी (गांधी)के लिअे प्रेमपूर्ण पूज्यभावसे अधिक आगे वे नहीं जा सकते। डॉ० राजेन्द्रप्रसादकी प्रामाणिक सादगी राष्ट्रपति-पदके ठाटबाट और शान-शौकतमें छिप गअी है। गांधीवादी रचनात्मक कार्यकर्ता देशमें सर्वत्र फैले हुअे हैं, परन्तु वे 'बेदम और हारे हुअे से" हो गये हैं। अैसी स्थितिमें विनोबा निकल आये और अिस तरह साधुवृत्ति राज-वृत्तिमें अुतर आअी।

अिसके बाद टेनिसन विनोबाका परिचय देते हुअे कहते हैं कि स्वभावसे विनोबा बुद्धिप्रधान, अभ्यासी, अेकान्तप्रिय आदमी हैं। अुनकी आंखोंमें अेक अैसा विनोद और हास्य रहता है, जो सन्तपनके भारके नीचे दब गया है। वे निश्चिन्त और शान्त-चित्त पुरुष हैं। लेखक विनोबाकी भाषाशक्तिका भी अुल्लेख करते हैं। अिन सारी शक्तियोंके साथ विनोबा भारतके सार्वजनिक कार्यक्षेत्रमें भूदानकी प्रवृत्ति लेकर आगे आये हैं। और दूसरे-तीसरे प्रलोभनोंसे सर्वथा दूर रहकर अपने भूदानके कार्यमें आगे बढ़ते जाते हैं।

परन्तु टेनिसन सवाल पूछते हैं: भूदान-प्रवृत्ति कोअी खास संस्थाका रूप लेकर या तंत्रबद्ध बनकर नहीं चलती। विनोबा केवल हृदय-परिवर्तन करनेकी बात ही कहा करते हैं। परन्तु अिसी भूमिका पर वे कब तक रह सकते हैं? देर-सबेर भूदानको 'तेजीसे गिरती जा रही कांग्रेस' की अनुगामी प्रवृत्ति बनना पड़ेगा। और तब विनोबाको अुसमें से हट जाना होगा, क्योंकि वे गांधीजीके समान सन्त-राजनीतिज्ञ नहीं हैं, परन्तु राजनीतिकी सीमामें अस्थाअी रूपसे आ धमकनेवाले साधुपुरुष हैं।

अिसके बाद अन्तमें वे अेक मार्मिक बात यह कहते हैं कि "राजनीतिज्ञ गांधीजीको वारिसकी जरूरत नहीं थी। विनोबा जो हृदय-परिवर्तनकी बातको ही पकड़ कर चलते हैं, अुसका कारण यही है।"

२

परन्तु गांधीजीकी कही हुअी यह बात हम जानते हैं कि 'मेरे बाद जवाहर मेरा वारिस होगा'। यह बात बहुत संभव है अुन्होंने गांधी-सेवा-संघकी अेक बैठकमें (१९३८ में?) कही थी। तब अुनसे पूछा गया था कि आपके अिस कथनका अर्थ क्या है? अुनके जैसे महापुरुष अिस प्रकार कहकर किसी व्यक्तिको महत्त्व दे दें, तो अुससे लोकशाहीका विकास रुक जाय। सार्वजनिक कार्यके नेतृत्वकी विरासत भला कैसी?

अिस प्रश्नके भीतर रहे कटाक्षको गांधीजी तुरन्त समझ गये और बोले, अिसका कुछ भी अर्थ नहीं है; मेरे कहनेका मतलब अितना ही था कि आज जिस प्रकार मैं देशका काम करता हूं, वैसा काम मेरे बाद शायद जवाहरलाल करेंगे अैसा मुझे लगता है। अिसका यह अर्थ कभी नहीं कि मैं अुन्हें अपनी विरासत सौंपता हूं। अुसके बाद शायद ही कभी गांधीजीने अिस भाषामें बात की होगी।

अैसा लगता है कि मि० टेनिसनको गांधीजीकी अिस बातका पता नहीं है। परन्तु अुन्होंने विनोबाके सम्बन्धमें अेक बात कही है कि गांधीजी कहा करते थे कि 'मेरा तत्त्वज्ञान मेरे बनिस्बत विनोबा अधिक समझते हैं।' हम जानते हैं कि १९४० में जब पहला वैयक्तिक सत्याग्रही नियुक्त करनेका प्रश्न अुठा तो गांधीजीन विनोबाको नियुक्त किया था।

अिन दो बातोंका अेकसाथ विचार करें तो क्या अैसा नहीं लगता कि गांधीजीने — भले अनजानमें ही सही — अपनी प्रतिभा-रूपी समृद्धिके मानो दो भाग कर दिये थे? राजनीतिक प्रतिभाके वारिस जवाहर और साधुताकी अथवा सिद्धान्त-दृष्टिकी प्रतिभाके वारिस विनोबा! अैसा कहा जा सकता है कि गांधीजीकी शक्ति अुनके चले जानेके बाद भारतकी परिस्थितियोंके असरकी वजहसे, चुम्बकसे बिजलीकी तरह, दो सिरों पर बंट गअी! विनोबा और जवाहरमें क्या अैसा ही अतिभेद नहीं दिखाअी देता?

३

मुझे याद है कि १९३० के बाद जवाहरलालजी गांधीजीके साथ हुअी अपनी चर्चाओंमें जब तब यह प्रश्न पूछते थे: 'आपकी कल्पनाके स्वराज्यमें राज्यकी दंडशक्तिको स्थान है या नहीं? है तो किस प्रकारका और कैसा?

और अैसा ही अेक झगड़ा अिन दोनोंके बीच खड़ा होता अीश्वरके विषयमें। मुझे याद आता है कि किसी समय

CC-0. Vinoba Ashram Collection.

जवाहरलालजीने यह कहा था कि बापू 'अीश्वर' शब्दका अुपयोग करते हैं, लेकिन मुझे जरा भी अुसका अर्थ समझमें नहीं आता। और गांधीजी जवाहरलालजीके 'आअिडियोलॉजी' शब्दके बारेमें कहते थे कि यह शब्द मेरे अनुकूल नहीं है।

अब देखिये विनोबा आज दंडशक्तिके पीछे दंड लेकर पड़ गये हैं! अितना ही नहीं, अुन्होंने अिसे अपना मिशन ही बना डाला है। अब तो वे अेक पैगम्बरकी अदासे बोलने लगे हैं। अुदाहरणके लिअे, पुरीमें अुन्होंने कहा, 'मैं देखता हूं कि अीश्वर मेरे द्वारा अहिंसक समाज (अर्थात् दंडरहित शासनमुक्त राज्य) की स्थापना करा रहा है।' जिसे अंग्रेज मानसशास्त्री 'पैगम्बर-ग्रन्थि' कहते हैं, वह मानो विनोबामें खिलती मालूम होती है।

अब दूसरी तरफ देखें तो जवाहरलालजीने विश्वमें शान्ति-स्थापनका मिशन अितने ही जोश और अुत्साहसे अपने हाथमें लिया है। लेकिन अुनमें पैगम्बर-ग्रन्थि नहीं है। यह ग्रन्थि गांधीजीमें भी नहीं थी; जीवनके अन्त तक अुन्होंने लोकशाही नेताकी अनुपम नम्रता धारण की। टागोर जैसेने अेक चर्चामें जब गांधीजीको चुनौती दी, तब अुन्होंने अेक बार अिस हद तक जरूर कहा था कि मैं मानता हूं कि मेरा खादीका सन्देश सारी दुनियाके लिअे है; परन्तु मैं नम्र मनुष्य हूं अिसलिअे अैसी बात कहता नहीं। अथवा जब अमेरिकाने अुन्हें आमंत्रण दिया तब अुन्होंने कहा था, 'मेरा काम यहां है; अुसमें मुझे सफलता न मिले तो बाहर किस ताकत पर दौड़ादौड़ कर सकता हूं?'

जवाहरलालजी आज राज्यकी दंडशक्ति अपने हाथमें धारण करके अुसे लोकशाहीका रूप देनेका प्रयत्न कर रहे हैं। स्वभावसे वे बुद्धिबलका अभिमान रखनेवाले विज्ञानवादी 'अिन्टेलेक्च्युअल अेरिस्टोक्रेट' हैं, फिर भी अैसे व्यक्तित्वके साथ वे ब्रिटिश लोकशाहीकी भावनाके भी हिमायती हैं। विनोबाके समान वे भी अभ्यासी बुद्धिप्रधान व्यक्ति हैं, अिसके अलावा कलारसिक भी हैं। भाषाशक्ति भी अुनमें है। परन्तु अिन सारी शक्तियोंका अुपयोग अुन्होंने स्वराज्यकी राजसत्ता द्वारा किया है।

४

परन्तु जवाहरलाल साधु बाबा नहीं हैं। अीश्वर और अध्यात्मकी व्याख्या अुन्हें नहीं आती; अुनके लिअे वह स्वाभाविक तो नहीं ही है। लेकिन विनोबा अिसके बिना बात नहीं कर सकते और मौके पर पौराणिक कथाओंकी अुपमाका प्रयोग किये बिना नहीं रहते।

दूसरे, जवाहरलालजीने गरीबीका जीवनमें कभी अनुभव ही नहीं किया। गांधीजी पर वे आक्षेप करते थे कि आपने गरीबीको आध्यात्मिक कारणसे अेक गुण बना डाला है। गांधीजी अधिक गहराअीमें न जाकर कहते कि, 'आर्थिक गरीबी मिटनी ही चाहिये; भूखेका अीश्वर पहले रोटी है, अुसके बाद ही वह अीश्वरको याद कर सकता है। रोटीके रूपमें अीश्वरको अुसके सामने प्रकट करना ही चाहिये। अिसीलिअे मैं खादी वगैराका काम करता हूं।'

बात यह है कि जीवन-मानको अधिकाधिक अूंचा अुठानेकी पश्चिमकी अुतावलीकी होड़ करना अज्ञान ही नहीं, घमंड भी है। दुनियाके सारे दुःखोंकी जड़ यह जीवनमान-वाद ही है। अिसने दुनियाकी प्रजाओंमें से परपीड़ा-भंजनका गुण मिटाकर निरे निर्लज्जता-पूर्ण राष्ट्रवादको और अुसके बाद अुपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवादको जन्म दिया है। जीवन-मान अूंचा अुठानेके लिअे यंत्रशक्तिका अुपयोग किया। अुसके बल पर दूसरे देशों पर आर्थिक और राजनीतिक अधिकार किया — करना ही पड़ा, वर्ना अतिशय अुत्पादनकी खपत कैसे होती? अैसे वादके कारण गरीबी अेक गुनाह समझी जाने लगी। व्यक्ति पार्थिव और आर्थिक महत्त्वाकांक्षाको गुण मानने लगे; और सन्तोष तथा निर्लोभता जैसे वातावरणमें मुंह छिपाने लगे। ये दोनों गुण कोअी अध्यात्मके नहीं हैं; हां, अुसमें अुनका अुपयोग जरूर है। परन्तु पहले वे दुनियाके व्यवहारमें जरूरी हैं। जगत्की प्रजाओंमें ये गुण न हों तो युद्ध ही होंगे और बड़े भागकी मानव-जाति भूखों ही मरेगी। अिन गुणोंके अभावकी अुपजाअू जमीनमें ही युद्धदेवका भोजन पैदा हो सकता है। अिस कारणसे गरीबी अेक सामाजिक और राष्ट्रीय आवश्यकताका गुण बनती है। गांधीजी यही कहते थे। परन्तु जन्मसे ही श्रीमंत जवाहरलालजी शायद मूल संस्कारके कारण भी अिस बातको नहीं समझ सकते। पश्चिममें पले और शिक्षा पाये हुअे होनेके कारण वहांके ही विचार अुनके दिमागमें घर किये हुअे हैं। जवाहरलालजीका यह पूर्वग्रह भारतकी नयी शान्ति-पूर्ण आर्थिक व्यवस्था रचनेमें बड़ा बाधक हो रहा है।

विनोबाके संस्कार अिससे बिलकुल अुलटे हैं। वे स्वभावसे तपस्वी और संन्यास वृत्तिवाले हैं। तीक्ष्ण बुद्धि भी रखते हैं; परन्तु अिसके बजाय वे तपबल पर ही ज्यादा झुके हुअे हैं। स्वभावसे ज्ञाननिष्ठावाले होते हुअे भी भक्तिके लिअे अुन्होंने प्रेम बढ़ाया है। अिस तरह वे ज्ञानी भक्त हैं। अिसलिअे हमारी संस्कृतिमें सदासे चली आअी ब्राह्मणवृत्तिकी अकिंचनताका अुन्होंने वरण किया है। अपरिग्रहका सामाजिक मूल्य भी वे जानते हैं। यह चीज गांधीजीको भी पसन्द थी, परन्तु वे अपनी अिच्छाके अनुसार अिसका अनुसरण नहीं कर सके। अैसी अभाव-भक्तिके कारण वे अिस वृत्तिका बहुत आदर करते थे। अिसीलिअे न अुन्होंने कहा था, 'विनोबा मेरा तत्त्वज्ञान मुझसे भी ज्यादा समझते हैं?' विनोबा मजाकमें कहते, देखना भाअी, गांधीजी तो दीवानके लड़के हैं, अिसलिअे अपरिग्रहकी अुनकी व्याख्या हमारे लिअे काम नहीं देगी! विनोबा स्वावलंबी श्रमप्रधान सादगीकी आर्थिक और सामाजिक शक्तिको अच्छी तरह समझते हैं। परन्तु वह तो गरीबी है, अैसा कहकर यंत्रोद्योग-विज्ञानवादी जवाहरलाल सच्चे दिलसे अिस बातमें साथ नहीं दे सकते। अिस विषयमें विनोबा गांधीजीके सच्चे वारिस हैं, जवाहरलाल नहीं।

५

गांधीजीने पाश्चात्य जगत् भी काफी देखा था। जवाहरलालजीने जिस अुमरमें देखा, अुससे कुछ बादमें, परन्तु थोड़ा भी कम नहीं देखा। विनोबाने वह जगत् परोक्ष रूपमें देखा, और अुसका रंग जरा भी अुन पर नहीं चढ़ा। बल्कि वे संस्कृत और वेद-अुपनिषद्की दुनियामें ही विहार करते रहे हैं। यह चीज भारतकी प्रजा समझती है, पसन्द करती है। वह अिसकी पूजा करती है। अिसी कारणसे गांधीजीको भी वह पसंद करती थी।

लेकिन अूपरकी यह समानता होते हुअे भी दोनोंमें अेक भेद है। भारतीय जनता विनोबाको ज्ञानदेव, तुकाराम, रामदास, अित्यादि प्राचीन सन्तोंकी कोटिका मानती है। अिसलिअे मैं जिसे सन्तशाही या ऋषिशाही कहता हूं, वैसे मानसकी प्रक्रिया चलती है। गांधीजी राष्ट्रके पिताके समान लगते थे। अुनके समयमें अेक विशेष प्रकारके बुजुर्गशाही मानसकी प्रक्रियासे काम चलता था। पुराने संस्कारोंके कारण शायद यह गांधीजीको पसन्द आता होगा, फिर भी वे अुदार दृष्टिवाले थे। अिसलिअे अुन्होंने भारतमें बुजुर्गशाही कायम नहीं होने दी, कांग्रेसके जरिये लोकशाहीसे काम लिया, और हमेशा यह माना कि कांग्रेस मुझसे बड़ी है। जब कांग्रेस भिन्न विचारोंकी तरफ मुड़ती मालूम हुअी, तब वे कांग्रेससे तटस्थ हो गये, परन्तु अलग रहकर भी मदद तो अुन्होंने कांग्रेसकी ही की और अुसीको महत्ता दी। अिसका कारण है: गांधीजी मानते थे कि व्यक्तिसे संस्था बड़ी है। विनोबा अिस विषयमें कुछ अलग विचार रखते मालूम होते हैं।

www.vinoba.in

बड़प्पन या वैयक्तिक महत्ता सामाजिक वस्तु है। व्यक्तिका बड़प्पन भी असलमें समाजके कारण ही है। वैसे व्यक्तिके नाते ही विचारें तो अुसका अन्त तो यही है कि आत्माके कारण सब अेक हैं — समान हैं; तब कौन बड़ा और कौन छोटा! 'अेकमेवाद्वितीयम्'। जगत्का व्यवहार ही अिसमें भेद पैदा करता है।

समाजके काम अुस अुस कामके अनुरूप संस्था या तंत्रके बिना नहीं चल सकते। व्यक्ति अुनके मारफत काम करे, परन्तु अुसमें से मठ या महंतशाहीको पैदा न होने दे। संस्था अपने नेता खुद प्राप्त करे अैसी प्राणवान् अुसे बनाये रखनेके लिअे व्यक्ति शुद्ध सेवाभावसे अुसमें जुड़ें और सत्ताके लोभमें न पड़ें। वर्ना अुसका विकास मर जायगा; और अन्तमें लोकशाही भी खतम हो जायगी।

दुनियाका अितिहास बताता है कि संतजीवनकी साधुता भी अेक शक्ति है। सन्त फ्रान्सिस, गुरु नानक, गुरु गोविन्द, गांधीजी वगैरा अनेक नाम गिनाये जा सकते हैं। परन्तु अुन्हें भी संगठनकर्ताकी जरूरत होती है। जैसे, सन्त फ्रान्सिसको पोप और कार्डिनल मिले; गांधीजीको सरदार वल्लभभाअी मिले।

विनोबा भी अिस न्यायसे मुक्त नहीं रह सकते। वे केवल गीताके अुपदेशक होते तो बात अलग थी। परन्तु वे तो भूदान-क्रान्ति करना चाहते हैं। अुसके संगठनका क्या होगा? टेनिसनने अिसका जो अुत्तर दिया है, वह कुछ हद तक सही है। वे कहते हैं कि भूदानका संगठन होगा और वह कांग्रेसका स्थान लेगा। अुत्तरका पहला भाग सही है; दूसरा भाग अधूरा और अधकचरा नहीं तो भी चर्चास्पद अवश्य है।

६

भूदानका संगठन खड़ा होता हम देख रहे हैं। सर्व-सेवा-संघ अुस संगठनका रूप लेता जाता है। १९४८ में समग्र सेवाके लिअे रचा गया यह तंत्र हमारी नजरके सामने केवल भूदान-तंत्र बनता जा रहा है। अितना ही नहीं, कांग्रेस पर भी कटाक्ष किया जाने लगा है। विनोबाने अपनी भावना पुरी-सम्मेलनमें प्रकट की कि कांग्रेस अहिंसक समाजकी स्थापनामें बाधक है, अिसका अुपाय खोजना होगा। विनोबाने कांग्रेसकी लोकशाही पद्धति पर भी तीखा कटाक्ष किया।

जवाहरलालजीका तंत्र कांग्रेस है। अुन्होंने अुसे देशकी प्रबलसे प्रबल संस्थाके नाते टिका रखा है। दूसरी संस्थाओंकी तुलनामें वह अैसी सिद्ध होती जा रही है। क्या अुसकी शक्ति अहिंसाके विकासके लिअे बाधक है? — यह प्रश्न सर्वोदय-सम्मेलनने देशमें अुठाया है।

टेनिसनने तो अिसका अुत्तर दे दिया है कि तेजीसे गिरती जा रही कांग्रेसके स्थान पर भूदान-बल चढ़ आयेगा। यद्यपि वे यह मार्मिक वाक्य कहकर छूट जाते हैं कि विनोबा अुसमें खड़े नहीं रह सकते; वे हृदय-परिवर्तनकी ही बात करते रहेंगे। तो यह नया तंत्र कौन बनायेगा? और किन लोगोंका बनेगा?

सर्वोदय-सम्मेलन गांधीजीकी लोक-सेवक-संघकी सूचनाके अनुसार अैसा कहता मालूम होता है कि कांग्रेस अैसा संघ नहीं बनी, अिसलिअे अुसका नैतिक संगठन हमें करना है। यह विचित्र है कि अपने स्वभावके विरुद्ध विनोबाने यह बात कही। फिर भी अिससे मालूम होता है कि विनोबा अिस बातको स्वीकार करते हैं कि किसी नये विचारको समाजमें गति प्रदान करके सिद्ध करनेके लिअे तंत्र या संस्थाका होना जरूरी है। और अुन्होंने लोगोंका आवाहन किया है कि अीश्वर अब वह तंत्र पैदा करे, अैसी प्रतीक्षा-भक्तिके लिअे सब अेकाग्र मनसे भूदान-कार्यमें लग जायं।

समाजमें सन्त-शक्ति पैदा होती है, तब अुसे समाजगत करनेके लिअे चतुर लोग भी सेवामें लग जाते हैं और अेकके साथ सिफरकी तरह अुसकी ताकत बढ़ाते हैं। टेनिसन कहते हैं कि गांधीजीके अेकके चले जानेके बाद सन्तवंशमें विनोबा अुस स्थान पर आते हैं। लेकिन अगर विनोबा संस्थाके बन्धनमें न मानें तो अुस अेकका स्थान वे पूरी तरह नहीं ले सकते। अिससे कम पड़नेवाली कड़ीका स्थान कोअी दूसरा ही ले सकता है। वह कौन हो सकता है? और कैसे पैदा होगा?

७

भूदान-कार्यमें लगे हुअे बहुतसे नेता कांग्रेससे अधिक प्रेम रखनेवाले नहीं हैं। कुछ लोग अुससे नाराज हैं या अुसके विरुद्ध हैं। अिस दबी हुअी निराशाको विनोबाने शब्दबद्ध किया कि कांग्रेस अहिंसक समाजके लिअे बाधक है। परन्तु कांग्रेस क्या मानती है? वह अिसका क्या अुत्तर देती है? वह भूदानको मदद करनेका प्रस्ताव करती है और अपने रास्ते आगे बढ़ती है।

सरकार भी भूदानको मदद करनेके लिअे तैयार है। अुसके पास पड़ी हुअी लाखों अेकड़ जमीन देनेके लिअे भी वह तैयार है। परन्तु विनोबामें राज्य-संस्थाके खिलाफ पूर्वग्रह होनेसे वे यह जमीन लेनेसे अिनकार करते हैं। क्या यह अिनकार ठीक है? पुरी-सम्मेलनने अिसका विचार नहीं किया।

जमीनके बंटवारेका काम भी सरकार सरल बना सकती है। खराब या पड़ती जमीनको यंत्रोंकी मददसे अपने फौजी अिंजीनियरिंग विभाग द्वारा समतल बनवा सकती है। अपनी विकास-योजनाओं द्वारा गांवोंके बेजमीन लोगोंको जमीन पर काम करनेके लिअे आवश्यक सम्पत्ति-दान भी दिलवा सकती है। सरकारी योजनाके पैसोंका अिस तरह अुपयोग किया जाना चाहिये; सरकारकी योजनाअें भी अिस तरफ मुड़ें, यह अुसे भी वांछनीय लगना चाहिये। परन्तु विनोबाका वैयक्तिक पूर्वग्रह ही तो कहीं अिसमें बाधक नहीं होता? वैसे अिस ढंगसे भूदान-प्रवृत्तिको आगे बढ़ाना अुसकी प्रगतिकी साधारण दिशा होनी चाहिये।

परन्तु जयप्रकाश जैसे अुस प्रवृत्तिके नेता भी शायद अैसा न चाहेंगे, अैसा न होने देंगे। अुन्हें कांग्रेस पसंद नहीं — वे अपना दूसरा अलग संगठन-बल खड़ा करना चाहेंगे। भूदान वह क्रान्ति करा सकता है, अैसी अुन्हें आशा है। वे समझते हैं कि विनोबाकी प्रतिभाका अुसमें अुपयोग हो सकता है। भारतके समाजवादी अपनी मनपसंद क्रान्ति करनेके लिअे गांधी जैसे नेताकी आवश्यकता मानते आये हैं। मान लें कि विनोबाकी लोकप्रियताका अैसा अुपयोग हो, तो भी क्या अुनकी वांछनीय क्रान्ति होगी?

८

क्रान्ति कोअी अिस या अुस व्यक्तिके बदलनेसे नहीं होती; अुसका जन्म वृष्टि-परिवर्तनके मूल्यमें है। अैसा अेक भी लक्ष्य नहीं जो कांग्रेसका न हो और भूदानका हो। यह हो सकता है कि कांग्रेस अपने काममें मन्द हो, और भूदानकी संस्थाअें बहुत तेज हों। लेकिन अिससे कोअी मूल्य-परिवर्तन नहीं होता। भूदान अब अगर अपने पांच करोड़ अेकड़की प्राप्तिके ध्येयको साधारण मानकर और 'सबै भूमि गोपालकी' अिस तत्त्वके आधार पर हृदय-परिवर्तनको मुख्य मानकर चलेगा, तो अुससे सत्त्व गुण तो बढ़ेगा परन्तु राजसका क्या होगा? टेनिसन कांग्रेसके सम्बन्धमें कहते हैं अुसी तरह भूदानमें भी मूल प्रेरणा खतम होकर केवल सात्त्विक पवित्र भाव ही नहीं रह जायगा? सात्त्विक बलका जब राजसिक समाजमें विनियोग होता है, तभी क्रान्ति होती है। परन्तु अुसके सत्त्वगुणको रजोगुणका बाना पहनना होगा। अिस कानूनसे वह बच नहीं सकता।

गांधीजी अिस कानूनका भलिभांति पालन कर सकते थे। विनोबाका अिस कानूनमें कितना विश्वास है, यही देखना है। जवाहरलालजी संत-शक्तिको समझते हैं, अुसे स्वीकार करना

पड़े तो स्वीकार भी कर लेंगे। परन्तु वह अुनके लिअे पराअी चीज है। अिसलिअे खादी, ग्रामोद्योग वगैरा अुन्हें पसंद तो हैं, परन्तु अुनकी रुचि और झुकाव तो अर्वाचीन यंत्रोद्योगवाद और शहरी संस्कृतिकी तरफ ही रहता है। फिर भी वे आशा रखते हैं शान्ति स्थापित करनेकी! जैसा कि श्री कुमारप्पा कहते हैं, जब तक राष्ट्रोंके अर्थतंत्रकी रचना गांधीनीतिके आधार पर नहीं होगी, तब तक दुनियामें शान्ति संभव नहीं हो सकती। परन्तु जवाहरलालजी किसी समय अिस विचार पर आये भी तो अुसे देर लगेगी। विनोबा अुससे अुलटी ही श्रद्धा रखते हैं। वे विज्ञानका अिनकार नहीं करते, परन्तु विज्ञानकी अति या अन्धपूजा भी नहीं कर सकते।

हमारे देशके नेतृत्वकी यह स्थिति है। अुसका हल सच्ची लोकशाहीकी शरणमें जानेसे ही मिलेगा। विनोबा और जवाहरलाल दोनोंको वही मिला सकती है। तब भूदानको सरकारका बल मिलेगा और ग्रामोद्योग कितनी बड़ी चीज हैं यह जवाहरलालकी समझमें आयेगा। अुसके बिना भारतमें लोकशाही और सुख-शान्ति असंभव है। युद्धको रोकनेकी जवाहरलालजीकी अिच्छा भी अिसी तरह पूरी हो सकेगी।

२९–४–'५५ मगनभाई देसाई
(गुजरातीसे)

केनियामें आतंकवाद

पूर्वी अफ्रीकामें ब्रिटिश सेनाओंके सेनापति जनरल अेक्सिनने —जो अब अपने पदसे अवकाश ग्रहण कर रहे हैं— केनियामें आतंकवादियोंके कार्योंकी अपनी रिपोर्ट पेश की है। अिस रिपोर्टमें वे कहते हैं, "अक्तूबर, १९५२ में केनियामें संकटकालीन स्थितिके आरंभसे अब तक ८३६२ आतंकवादी मारे जा चुके हैं। रक्षक सेनाओंके ५३५ आदमी मारे गये और राजभक्त अफ्रीकियोंके १४३१।"

वे कहते हैं कि "माअु-माअु आन्दोलनके खिलाफ हमारा युद्ध अब अपनी आखिरी मंजिल पर है" और यह विश्वास प्रगट करते हैं कि "सन् १९५५ तक हम अैसी स्थिति पर पहुंच जानेकी आशा करते हैं, जो केनियामें अिस संकटके पहलेवाली स्थितिसे विशेष भिन्न नहीं होगी, बल्कि कअी अंशोंमें बेहतर होगी।"

अूपर दिया गया विवरण नैरोबी, १२ अप्रैल, १९५५ की रायटरकी खबरसे लिया गया है। यह समझमें नहीं आता कि सन् १९५५ की स्थिति १९५२ की स्थितिसे भिन्न क्यों नहीं होगी। ब्रिटिश सेनाओं द्वारा 'आंतकवादियों' की हत्याका यह आंतककारी व्यापार क्या स्थितिमें कोअी भेद नहीं अुत्पन्न करता? जनरल साहब अगर यह कहते कि तब स्थिति हमारी दृष्टिसे बेहतर होगी चाहे दूसरे लोग अुसे बदतर समझें, तो अुनकी बात ज्यादा सही होती। जो हो, अिसमें कोअी सन्देह नहीं कि साम्राज्यशाही सेनाके द्वारा —जो वहां अुस प्रदेशको अपने चंगुलमें दबाये रखनेके लिअे ही स्थित है— पीड़ित अफ्रीकी जनताकी यह कानूनी हत्या अुस देशकी परिस्थितिमें जबरदस्त फर्क पैदा कर रही है। अलबत्ता, घटनासे संबंध रखनेवाली दोनों पार्टियां, यानी ब्रिटिश शासक और अुनकी अफ्रीकी प्रजा अिस फर्कका विचार अपने-अपने ढंगसे करेंगी।

अिस घटनासे अेक तीसरी पार्टीका भी संबंध है; यह पार्टी है बाकी दुनिया। परिस्थितिमें जो फर्क पैदा हो रहा है, अुस पर दुनियाको चिन्ता हुअे बिना नहीं रह सकती। दुनियाका सारा मानव-समाज अेकताकी दिशामें बढ़नेकी कोशिश कर रहा है। क्या यह साम्राज्यवादी आतंकवाद अुसके अिस प्रयत्नमें सहायक है? अेशिया और अफ्रीका, जिन्हें विश्वके अितिहासकी पिछली दो-तीन शताब्दियोंमें साम्राज्यवादका कष्ट सबसे ज्यादा भुगतना पड़ा है, अिस प्रश्नका अुत्तर मांगते हैं।

अभी कुछ दिन हुअे दक्षिण अफ्रीकासे साम्राज्यवाद या औपनिवेशिक रंगवादके अेक प्रतिनिधिने बहुत आवेशपूर्वक चुनौती देते हुअे यह जवाब दिया कि भारत अफ्रीकी भूमिमें — जिस पर अभी युरोपीय सभ्यताका अधिकार है — अपना प्रसार करना चाहता है और अुसे हड़पना चाहता है। कम-से-कम कहा जाय तो अिस तरहका प्रत्यारोप अुपरोक्त प्रश्नका अुत्तर नहीं है; यह असली सवालको टालनेका प्रयत्न है। प्रश्न यह है कि १९ वीं सदीका साम्राज्यवाद, अुपनिवेशवाद या रंगवादका विचार खतम हुआ है या नहीं? युरोप अपने विगत अितिहासके अुस अनिष्ट प्रकरणको खतम करनेके लिअे राजी है या कि वह अभी भी, जिस तरह गोआमें हो रहा है अुस तरह, अपनी अहंकारपूर्ण लोभ-वृत्तिको जारी रखना चाहता है? अफ्रीकामें बसे हुअे युरोपवासी अफ्रीकियोंके साथ समानता और मित्रताकी भूमिका पर रहनेके लिअे तैयार हैं या कि वे अभी भी अपनेको काली प्रजाका गोरा शासक मानते हैं और शस्त्रास्त्र तथा मनमाने कानूनकी सहायतासे शासकोंकी ही तरह वहां रहना चाहते हैं?

२१–४–'५५ मगनभाई देसाई
(अंग्रेजीसे)

कपड़ा-अुद्योग और लंकाशायर

कालचक्र कितनी तेजीसे घूमने लगा है? लंकाशायरके कपड़ा-अुद्योगको राहत पहुंचानेके लिअे भारत-सरकार अुस कपड़े पर लगे आयात-करको घटा रही है! कहां १९२० का युग और कहां १९५५ का यह जमाना! और भारतीय कपड़ा-अुद्योगके मालिक अपना माल बाहर भेजनेके लिअे अनुकूलता खोज रहे हैं।

अर्थमंत्री श्री देशमुखने अिस बारेमें बोलते हुअे कहा कि आयात-कर घटानेसे देशके अुद्योगोंको नुकसान नहीं होगा। यह कमी जाहिर की गअी अुसके पहले लंकाशायरके और हमारे देशके अुद्योगपति (जापानके अुद्योगपति अुस समय अुनके भीतर ही मान लिये गये थे।) आपसमें मिले थे और किसी समझौते पर पहुंचे थे। करमें कमी अुस समझौतेके आधार पर ही की गअी होगी, अिसीलिअे यहांके अुद्योगपति मनमें नाराज होते हुअे भी अिसके खिलाफ विशेष कुछ बोलेंगे नहीं।

लंकाशायरके संकटको समझकर अैसा किया गया यह ठीक है; परन्तु अिस सारे किस्सेके पीछे बात तो दूसरी ही है। अेक तीसरा वर्ग भी हमारे यहां है, जिसका विचार न तो सरकार करती है, और न अुद्योगपति ही अुसकी कोअी परवाह करते हैं। वह वर्ग है भारतके किसानों और बुनकरोंका — अर्थात् खादी-अुद्योग चलाने वाला वर्ग। अुसके हित पर विशेष दृष्टि रखकर भारत-सरकार चले तो अुसे दोनों देशोंके अुद्योगपतियोंको समझाना चाहिये कि अन्तमें आपको यह अुद्योग समेटकर देशके किसानों और बुनकरोंको सौंप देना होगा, ताकि अुन्हें रोजी और रोटी मिल सके।

७–५–'५५ म० प्र०
(गुजरातीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
अुड़ीसामें विनोबा — ४	कु० दे०	८१
आबूमें मधुमक्खी-पालन	अे० राजगोपालन्	८३
कानूनकी मर्यादा है	मगनभाई देसाई	८४
गांधी, नेहरू और विनोबा	मगनभाई देसाई	८५
केनियामें आतंकवाद	मगनभाई देसाई	८८
टिप्पणी :		
कपड़ा-अुद्योग और लंकाशायर	म० प्र०	८८

www.vinoba.in